tcsacademy

सामान्य अध्ययन*(General Studies)*

प्राचीन भारतीय इतिहास

DEMO NOTES

M-1/80 Sec-B, Opp. Sardar Ji Sari Wale, Near Kapoorthala,
Aliganj, Lucknow
Ph. : 0522-4005421, 9565697720
Website : www.tcsacademy.org

पाठ्यक्रम, नोट्स तथा बैच संबंधी **updates** निरंतर पाने लिये निम्नलिखित पेज को **"Like"** करें

www.facebook.com/tcsacademy

www.twitter.com/@tcsacademy

इकाई–1

प्राचीन भारतीय इतिहास के स्त्रोत (*Sources of Ancient Indian History*)

इतिहासकार एक वैज्ञानिक की भांति उपलब्ध सामग्री की समीक्षा करके अतीत का सही चित्रण करने का प्रयास करता है उसके लिए साहित्यिक सामग्री पुरातात्विक साक्ष्य और विदेशी यात्रियों के वर्णन सभी का महत्व है प्राचीन भारतीय इतिहास के अध्ययन के लिये पूर्णतया शुद्ध ऐतिहासिक सामग्री विदेशो की अपेक्षा अल्प मात्रा में उपलब्ध है यद्यपि भारत में यूनान के हेरोडोटस या रोम के लिवी जैसे इतिहासकार नहीं हुये, अतः कुछ पाश्चात्य विद्वानों की या मानसिक धारणा बन गयी थी। कि भारतीयों को इतिहास की समझ ही नहीं थी लेकिन, ऐसी धारणा बनाना भारी भूल हो गयी थी। वस्तुतः प्राचीन भारतीय इतिहास की संकल्पना आधुनिक इतिहासकारों की संकल्पना से पूर्णतः अलग थी। वर्तमान इतिहासकार ऐतिहासिक घटनाओं के कारण कार्य सम्बन्ध सीापितत करने का प्रयास करते है लेकिन प्राचीन इतिहासकार केवल उन घटनाओं या तथ्यों का वर्णन करता था जिनमें जनमानस को कुछ सीखने को मिल सके। महाभारत में इतिहास संकल्पना दी गयी है उससे भारतीयों के इतिहास विषयक संकल्पना उद्‌भाषित होती है। महाभारत के अनुसार ऐसी प्राचीन लोकप्रिय कथा जिससे धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की व्यावहारिक शिक्षा मिल सके 'इतिहास' कहलाती है। प्राचीन युग में भारतीय, धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन चारो पुरूषार्थो को जीवन के लक्ष्य की प्राप्ति में सहायक समझते थे। इसलिये प्राचीन भारत का इतिहास राजनैतिक कम सांस्कृतिक अधिक है। भारतीय इतिहासकारों का दृष्टिकोण पूर्णतः धर्मपारक था, किन्तु धर्म के अतिरिक्त अनेक सामाजिक, आर्थिक एंव राजनैतिक कारण थे जिन्होनें भारत में अनके आन्दोलनों, संस्थाओं, विचारधाराओं को जन्म दिया।
अतः भारतीय इतिहास का सार्वभौमिक स्वरूप जानने के लिये इन तथ्यों का अध्ययन करना आवश्यक है।

आधुनिक इतिहासकारों ने इतिहास में केवल राजनैतिक तथ्यों का वर्णन करना ही अपना कर्तव्य नहीं समझा बल्कि उनके वर्णन में आम जनमानस उतना ही महत्व रखते है जितना की सम्राटों अथवा सम्राज्यों के उत्थान के और पतन। वह उन राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक एवं बौद्धिक परिवर्तनोंक का विश्लेषण एंव अध्ययनकर्ता है, जिनके द्वारा मनुष्य उपलब्ध प्राकृतिक संसाधनो का उपयोग करके अपने जीवनकाल को पूर्व की अपेक्षा अधिक सुखमय बनाने का प्रयत्न करता है। अतः प्रसिद्ध इतिहासकार कौशाम्बी के अनुसार ''उत्पादन के साधनों और उनके पारस्परिक सम्बन्धों का तिथि क्रमानुसार अध्ययन करने से ही विकास के कालक्रम की विस्तृत जानकारी मिल सकती है''। उनके अनुसार इसके आधार पर हम यह जान सकते है कि जनसाधारण किस प्रकार अपना वजीवनयापन करते थे।

भारतीय इतिहासक के काल को तीन भागों में बांट कर देखा जा सकता है। वह काल जिसके लिये कोई लिखित साधन उपलब्ध नहीं है और जिसमें मनुष्य का जीवन अपेक्षाकृत पूर्णतः सभ्य नहीं था, 'प्रागैतिहासिककाल' कहलाता है। इतिहासकाल उस काल को ''ऐतिहासिक काल'' का नाम देते है जिसके लिये लिखित साक्ष्य उपलब्ध है और जिनमें मनुष्य सभ्य बन गया था। प्राचीन भारतीय इतिहास में लिखित साधन उपलब्ध तो है लेकिन आस–पास और गूढ़ लिपि में है जिनका अर्थ निकालना कठिन है। इस काल को भारतीय इतिहास काल को आदि ऐतिहासिक काल का इतिहास कहते है। सैंधव सांस्कृति की गणना 'आद्य ऐतिहासिक काल' के अन्तर्गत की जाती है। इसी आधार पर हड़प्पा संस्कृति से पूर्व का भारतीय इतिहास 'प्रगैतिहासिक' और लगभग ईसा पूर्व 600 के बाद का इतिहास 'ऐतिहासिक काल' कहलाता है। क्योंकि भारत में प्राचीनतम् लिखित साक्ष्य अशोक के अभिलेख है जिनका काल ईसा से पूर्व तीसरी शताब्दी है और इस भाषा के विकास में भी लगभग 300 वर्ष लगे होंगे।

प्रागैतहासिक काल का इतिहास लिखते समय इतिहास काल पूर्णतया पुरातात्विक साक्ष्यों पर निर्भर रहना पड़ता है। आदि इतिहास लिखते समय वह पुरातात्विक एवं साहित्य दोनो प्रकार के साधनों का उपयोग करता है तथा इतिहास लिखते समय व इन दोनो साधनो के अतिरिक्त विदेशी लेखको के वर्णनों करता है। विदेशी यात्रियों के वर्णन भी साहित्यिक साधन है लेकिन उनकी उपयोगिता के विस्तृत वर्णन की आवश्यकता के कारण उनका वर्णन अलग शीर्षक के अन्तर्गत किया गया है। इन सभी ऐतिहासिक साक्ष्यों का उपयोग करके इतिहासकार काल विशेषकर ठीक–ठीक चित्र प्रस्तुत करने का प्रयास करता है।

अतः हम सुविधा के लिये भारतीय इतिहास को जानने के साधनों को तीन शीर्षकों में रख सकते है।

- पुरातत्व सम्बन्धी साक्ष्य।
- विदेशी यात्रियों के विवरण।
- साहित्यिक साक्ष्य।

M-1/80 Sec-B, Opp. Sardar Ji Sari Wale, Near Kapoorthala,
Aliganj, Lucknow
Ph. : 0522-4005421, 9565697720
Website : www.tcsacademy.org

ऐतिहासिक स्त्रोतों का वर्गीकरण *(Classification of Sources)*

M-1/80 Sec-B, Opp. Sardar Ji Sari Wale, Near Kapoorthala,
Aliganj, Lucknow
Ph. : 0522-4005421, 9565697720
Website : www.tcsacademy.org

पुरातात्विक स्त्रोत (*Archaeological Sources*)

पुरातात्विक स्त्रोतों में निम्नांकित शामिल है :

1. अभिलेख : पुरातात्विक साक्ष्यों के अन्तर्गत सर्वाधिक महत्वपूर्ण साक्ष्य अभिलेख है। प्राचीन भारत के अधिकतर अभिलेख पत्थरों या धातु की पटिकाओं पर खुदे मिले है, अतः उनमें साहित्यिक साक्ष्य की भांति परिवर्तन करना असम्भव था। हालांकि सभी उत्कीर्ण अभिलेखों पर उनकी तिथि अंकित नहीं है, फिर भी अक्षरों की बनावट के आधार पर उनका समय मोटें तौर पर निर्धारित हो जाता है। सबसे प्राचीन अभिलेखों में मध्य एशिया के बोगज कोई से प्राप्त अभिलेख है जिनपर वैधिक देवता मित्र, वरूण, इन्द्र और नासत्य के नाम मिलते है। ये लगभग 1400 ईसा पूर्व के है तथा ऋग्वेद की तिथि ज्ञात करने में सहायता मिलती है। भारत में सबसे प्राचीन अभिलेख अशोक के है केवल मास्की तथा गुर्जरा (मध्यप्रदेश) से प्राप्त अभिलेखों में अशोक के नाम का स्पष्ट है तथा अशोक के अन्य अभिलेखों में से देवताओं का प्रिय, ' प्रियदर्शी राजा' कहा गया हैं। इन्हीं अभिलेखों से अशोक के धर्म और राजस्व के आदर्श पर पर्याप्त प्रकाश पड़ता है अशोक के अभिलेख ब्राह्मी, खरोष्ठी, ग्रीक तथा अरामाइक लिपि में उत्कीर्ण है। ब्राह्मी लिपि को सबसे पहले 1837 ईसवीं में जेम्स प्रिसेंप नामक विद्वान ने पढ़ा था। अशोक के अभिलेख सरकारी एवं निजी दोनो प्रकार के है। सरकारी अभिलेख या तो राज कवियों लिखे जो प्रशस्तियाँ है या भूमि–अनुदान पत्र। प्रशस्तियों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण अभिलेख समुद्रगुप्त का प्रयाग प्रशस्ति अभिलेख है। जिसने समंद्रगुप्त की विजयों और नीतियों का पूर्ण विवेचन मिलता है। इसी तरह राजा भोज की ग्लवालियर प्रशस्ति में इस शासक की उपलब्धियों का वर्णन है। इसी तरह के अभिलेखों के अन्य उदाहरण कलिंगराज खारवेल का हाथीगुम्फा अभिलेख, गौतमी बलश्री का नासिक अभिलेख, रूद्रदामन का गिरनार शिलालेख, बंगाल के शासक विजयसेन का देवपाड़ा अभिलेख, स्कन्दगुप्त का भीतरी स्तम्भलेख, जूनागढ़, शिलालेख और चालुक्य नरेश पुलकेशित द्वितीय का ऐहोल अभिलेख है। कुछ पाषाण या स्तम्भों पर खुदे है तथा उनके प्राप्ति स्थलों में उस शासक के राज्य की सीमाओं का भी अनुमान लगाया जा सकता है। उदाहरण स्वरूप अशोक के अभिलेखों से उसके साम्राज्य विस्तार की जानकारी प्राप्त होती है। भूमि अनुदान पत्र ज्यादातर विश्वसनीय नहीं है, क्योंकि राज्य कवियों ने इन प्रशस्तियों और अनुदान पत्रों पर अतिश्योक्तिपूर्ण वर्णन किया है जो सम्भव नहीं है। ये अनुदान पत्र मुख्यतः तांबे की चादरो पर उत्कीर्ण है। इन अनुदान पत्रों में भूमिखण्डों की सीमाओं के साथ उस समय का वर्णन मिलता है, जब वे भूमिखण्ड दान में दिये गये।

अभिलेख	शासक	विषय
हाथी गुम्फा अभिलेख	खारवेल	डसके शानकाल की घटनाओं का क्रमबद्ध विवरण
जूनागढ़ अभिलेख	रूद्रदामन	इसकी विजयों एंव व्यक्तित्व का विवरण
नसिक अभिलेख	गौतमी बलश्री	सातवाहनकालीन घटनाओं का विवरण
प्रयाग स्तभलेख	समुद्रगुप्त	डसकी विजयों एवं नीतियों का वर्णन
ग्वालियर अभिलेख	भोज प्रतिहार	गुर्जर प्रतिहार शासकों के विषय में जानकारी
मन्दसौर अभिलेख	मलवा नरेश यशोवर्मन	सैनिक उपलब्धियों का वर्णन
ऐहोल अभिलेख	पुलकेशिन द्वितीय	हर्ष एवं पुलकेशिन–द्वितीय के युद्ध का विवरण

वस्तुतः निजी अभिलेख मंदिरों में या मूर्तियों पर उत्कीर्ण है इन पर जो तिथियां उत्कीर्ण है, उनसे इन मंदिरों के निर्माण के समय ज्ञात होता है। इस प्रकार इन अभिलेखों से मूर्ति–कला और वस्तुकला के विकास पर विस्तृत प्रकाश पड़ता है और तत्कालीन धार्मिक स्थिति के बारे में जानकारी प्राप्त होती है और इनसे भाषाओं के ज्ञान पर भी प्रकाश पड़ता है। उदाहरण के लिये गुप्तकाल से पहले के अधिकतर अभिलेख में प्राकृत भाषा में लिपिबद्ध है और उनमें ब्राह्मोत्तर धार्मिक समुदायों, जैसे की जैन धर्म और बौद्ध धर्म का उल्लेख है। गुप्त और गुप्तोत्तर काल के अधिकतर संस्कृत भाषा में है और उनमें ब्राहम्ण धर्म का विशेष उल्लेख है। निजी अभिलेखों से तत्कालीन राजनैतिक स्थिति पर भी प्रकाश पड़ता है क्योंकि उनमें उस समय के अधिकतर शासको का भी उल्लेख है तथा इनमें उच्च अधिकारियों के पदों एवं तत्कालीन कर आदि का भी उल्लेख है। दक्षिण भारत के पल्लव, चालुक्य, राष्ट्रकूट, पांड्य और चोलवंशो का इतिहास लिखने में इन शासकों के अभिलेख बहुत उपयोगी सिद्ध हुये है।

M-1/80 Sec-B, Opp. Sardar Ji Sari Wale, Near Kapoorthala,
Aliganj, Lucknow
Ph. : 0522-4005421, 9565697720
Website : www.tcsacademy.org

विदेशों से प्राप्त कुछ अभिलेखों से भी भारतीय इतिहास की जानकारी प्राप्त होती है। एशिया माइनर में बोगजकोई नामक स्थान पर लगभग ईसा पूर्व 1400 का समझौता पत्र अभिलेख मिला है। इसमें वैदिक देवताओं के नाम मिलते है। इससे ज्ञात होता है कि वैदिक आर्यो के पूर्वज एशिया माइनर में भी रहते है। पर्सीपोलित और बेहिस्तून अभिलेखों से ज्ञात होता है कि ईरानी सम्राट द्वारा प्रथम ने सिधुं नदी की घाटी पर अधिकार कर लिया था।

उपर्युक्त तथ्यों से स्पष्ट होता है कि – 'प्राचीन भारत का राजनैतिक इतिहास' लेखन में भारतीय एंव विदेशी अभिलेख सर्वाधिक उपयोगी सिद्ध हुये हैं।

2. स्मारक और भवन : प्राचीन काल में भारत में भारी संख्या में भवनों का निर्माण हुआ। इन भवनों के अधिकांश अवशेष सम्पूर्ण देश में बिखरे अनेकानेक टीलों के नीचे दबे हुये हैं। महलों और मंदिरों की शैली से वास्तुकला के विकास पर पर्याप्त प्रकाश पड़ा है। उत्तर भारत के मंदिरों की कुछ अपनी विशेषतांए हैं तथा उनकी कला की शैली 'नागर शैली' कहलाती है एवं दक्षिण भारत के मंदिरों की कला शैली 'द्रविड़ शैली' कहलाती है। जिन मंदिरों के निर्माण पर नागर शैली एंव द्रविड़ शैली दोनों का प्रभाव पड़ा है, वह 'बेसर शैली' कहलाती है। मंदिरों, स्तूपों और विहारों से तत्कालीन धार्मिक विश्वासों पर प्रकाश पड़ता है। दक्षिण–पूर्वी एशिया और मध्य एशिया में जो मंदिरो, स्मारको और स्तूपों के अवशेष प्राप्त हुये है उनसे भारतीय संस्कृति के प्रसार पर महत्वपूर्ण प्रकाश पड़ा है। जावा का प्रसिद्ध स्मारक 'बोरो बुदूर' इस बात का प्रमाण है कि नौंवीं शताब्दी में महायान बौद्ध धर्म अति लोकप्रिय हो गया था। इस प्रकार हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि भारत के वैदेशिक सम्बन्ध इस प्रकार के थे।

3. सिक्के : पुरातात्विक साक्ष्यों में सिक्कों का विशेष स्थान है सिक्कों के अध्ययन को मुद्रणशास्त्र (न्यूमिस्मैटिक्स) कहते है। वस्तुतः आज कल की तरह प्राचीन भारत में कागजी मुद्रा का प्रचलन नहीं था परन्तु धातु मुद्रा (सिक्का) चलती थी। हड़प्पा काल में धातु मुद्रा की जगह मोहरों और मनको का प्रचलन था जिससे व्यापार प्रणाली संचालित होती थी। वस्तुतः तांबे, चांदी, सोने और शीशे के सिक्कों को सांचे बड़ी संख्या में मिले है। इनमें से अधिकांश सांचे पुषाणकाल के प्राप्त हुये है। गुप्तोत्तरकाल में ये सांचे लगभग लुप्त हो गये है।

प्राचीन भारत में आधुनिक बैंकिग प्रणाली प्रचलित नहीं थी, इसलिये लोग अपने धर्म अर्थात् सिक्के, मिट्टी और काँसे के बर्तनों में रखकर जमीन के अन्दर या ऐसी जगह रखते थे, जहां पर वे सुरक्षित रह सके एंव इनका उपयोग आर्थिक संकट या विपत्ति के समय करते थे। प्राचीनतम् सिक्कों पर अनेक चिन्ह उत्कीर्ण है। उन पर किसी प्रकार के लेख नहीं है। यह सिक्के 'आहत सिक्के' कहलाते है। इन पर जो चिन्ह उत्कीर्ण है वे पूर्णतः स्पष्ट नहीं है। इन सिक्कों को राजाओं के अतिरिक्त संभवतः व्यापारिक श्रेणियों और नगर निगमों ने चालू किया था। यद्यपि, इन सिक्कों से इतिहासकारों को कोई विशेष सहायता नहीं मिली है, लेकिन जब उत्तर–पश्चिम भारत पर बैक्टिरियां की हिन्द यूनानी शासकों ने अधिकार कर लिया और लेख वाले सिक्के चलाये तो भारतीय शासक भी लेख वाले सिक्के चलाने लगे। अधिकतर शासक इन सिक्को पर अपनी आकृति करवाते थे। अतः ये सिक्के प्राचीन भारत का राजनैतिक इतिहास लिखने में बहुत उपयोगी सिद्ध हुये है। उदाहरण स्वरूप यूनान और रोम के इतिहासकारों ने हिन्द यूनानी शासकों का लेख किया है। किन्तु, इनके सिक्कों के आधार पर इनके राज्यकाल का पूरा इतिहास सम्भव न हो सका। गुप्त साम्राज्य भारत के इतिहास को जानने के लिये तत्कालिक साधन बहुत कम उपयोगी सिद्ध हुये है। क्योंकि हर्ष जैसे प्रसिद्ध शासक इन चालों के, राष्ट्रकुट, प्रतिहार और पल्लव वंश के शासको के बहुत कम सिक्के मिले है।

4. मूर्तियां : प्राचीन भारतीयों इतिहास में कुपाषाणों में, गुप्त शासको और गुप्तोत्तरकाल में जो मूर्तियां बनायी गयी उनसे जन साधारण की धर्मिक आस्थाओं और मूर्तिकलाओं के विकास पर प्रकाश पड़ता है। कुपाषाणकालीन मूर्तियों पर वैदेशिक प्रभाव स्पष्टतः दिखायी पड़ता है। गुप्तकालीन मूर्तिकला में अन्तरात्मा तथा मुखाकृति में जो आसांमजस्य है किसी भी काल की कला में नहीं प्राप्त होता है। गुप्तोत्तर काल की कला में सांकेतिकता अधिक मिलती है। जिसे केवल वहीं जान सकता है जो कला में निपुण है। प्राचीन भारत की मूर्तिकला से जनसाधारण के जीवन पर पर्याप्त प्रकाश पड़ा है। भरहुत, बोधगया, साँची और अमरावती की मूर्तिकला में जनसाधारण के जीवन की अति सजीव झलक मिलती है।

5. चित्रकला : 'अजंता के चित्रों में मनोभावों की सुन्दर झलक मिलती है। जैसे–माता और शिशु तथा 'मरणासन्न राजकुमारी' जैसे चित्रों का सुन्दर चित्रण मिलता है। चित्रकला से हमें तत्कालीन जीवन की झलक देखने को मिलती है।

M-1/80 Sec-B, Opp. Sardar Ji Sari Wale, Near Kapoorthala, Aliganj, Lucknow
Ph. : 0522-4005421, 9565697720
Website : www.tcsacademy.org

साहित्यिक स्त्रोत (*Literary Sources*)

साहित्यिक साक्ष्य के अन्तर्गत साहित्यिक ग्रंथों से प्राप्त सामग्रियों का अध्ययन किया जाता है। इन साहित्यिक साक्ष्यों को हम दो भागों में बांटते है– 1 धार्मिक साहित्यिक तथा 2 लौकिक साहित्य।

धार्मिक साहित्य में ब्राहम्ण तथा ब्राहम्णोतर ग्रंथ आते है। पुनः ब्राहम्ण ग्रंथो में वेद, उपनिषद, रामायण, महाभारत, पुराण तथा स्मृतिग्रंथ आते है, जबकि ब्राहम्णेतर ग्रंथों में बौद्ध तथा जैन साहित्य का उल्लेख किया जा सकता है। इसी तरह, लौकिक साहित्य में ऐतिहासिक ग्रंथ, जीवनियाँ, कल्पना–प्रधान तथा गल्प साहित्य आते हैं।

प्रमुख साहित्यिक रचनायें (*Prominent Literary Marks)*

क्र. सं0	रचना	रचनाकार	विशेष तथ्य
1.	अष्टाध्यायी	पाणिनि	व्याकरण ग्रंथ
2.	महाभाय (अष्टाधायी पर टीका)	पंतजलि	पुष्यमित्र शुंग के विषय में जानकारी मिलती है।
3.	निरूक्त	यास्क	वैदिक शब्दों की व्युप्ति का विवेचन है एवं छंद श ास्त्र और ज्योतिष शास्त्र का उल्लेख
4.	मुद्राराक्षस	विशाखदत्त	मौर्य काल
5.	परिशिष्ट पर्व	हेमचंद्र	मौर्य काल (चंद्रगुप्त)
6.	स्मरादित्यकथा	हरिभद्र सूरी	जैन धर्म
7.	कुवलयमाला	उद्योतन सूरी	
8.	आदि पुराण	जिनसेन	
9.	उत्तर पुराण	गुणभंद्र	
10.	कथासरित्सागर	सोमदेव	
11.	वृहतकथामंजरी	क्षेमेन्द्र	मौर्य काल
12.	अर्थशास्त्र	कौटिल्य विष्णुगप्त	
13.	नीतिसार	कामंदक	गुप्तकालीन राज्यतंत्र पर कुछ प्रकाश पड़ता है।
14.	नीतिवाक्यामूर्त	सोमदेव सूरि	गुप्तकालीन राज्यतंत्र पर कुछ प्रकाश पड़ता है।
15.	मालकिाग्निामित्रम	कालिदास	शुंगवंश के बारे में जानकारी
16.	रघुवंशम	कालिदास	समुद्रगुप्त की दिग्विजय
17.	मृच्छकटिकम्	शूद्रक	गुप्तकालीन समाज का वर्णन
18.	दशकुमार चरित	दण्डी	गुप्तकालीन समाज का वर्णन
19.	हर्ष चरित	बणभट्ट	हर्ष की उपलब्धियों का वर्ण
20.	गौड़हो	वाक्पति	कन्नौज के शासक यशोवर्मा का इतिहास
21.	विक्रमांकदेवचरित	बिल्हण	कल्याणी के परवर्ती चालुक्य नरेश ा विक्रमादित्य की उपलब्धियों का वर्णन
22.	रामचरित	संध्याकार नदी	बंगाल के शासक रामपाल की जीवनकथा
23.	कुमार पाल चरित	जयसिंह	गुजरात के शासक कुमार पाल की उपलब्धियों का वर्णन
24.	द्वयाश्रय काव्य	हेमचंद्र	गुजरात के शासक कुमार पाल की उपलब्धियों का वर्णन

M-1/80 Sec-B, Opp. Sardar Ji Sari Wale, Near Kapoorthala, Aliganj, Lucknow
Ph. : 0522-4005421, 9565697720
Website : www.tcsacademy.org

25.	नवसाहसांक चरित	पद्मगुप्त	परमार वंश का वर्णन
26.	पृथ्वीराज विजय	जयानक	पृथ्वीराज चौहान की उपलब्धियों का वर्णन
27.	पृथ्वीराज रासो	चंद्रबरदाई	पृथ्वीराज चौहान की उपलब्धियों का वर्णन
28.	प्रबंध चिंतामणि	मेरूतुंग	गुजरात के शासकों का वर्णन
29.	हम्मीर मद मर्दन	जयसिंह	गुजरात के शासकों का वर्णन
30.	राजतरंगिणी	कल्हण	कश्मीर के राजवंश की विस्तृत जानकारी मिलती है
31.	परिशिष्टपर्वन	हेमचंद्र	जैन धर्म एवं मौयवंश

विदेशी यात्रियों के वृतांत / विवरण (*Foreign Travellers' Memories/Description*)

प्राचीन भारतीय इतिहास लेखन में विदेशी यात्रियों के विवरण भारतीय लेखकों के वर्णनों की अपेक्षा अधिक उपयोगी सिद्ध हुये हैं। परंतु यूनानी लेखक भारतीय भाषा और परिवेश से अनभिज्ञ थे, अतः उनके सभी विवरणों को पूर्णतः सत्य नहीं माना जा सकता। इसी प्रकार चीनी यात्रियों के वर्णन भी पूर्णतया सही प्रतीत नहीं होते हैं क्योंकि उनके लेखन का दृष्टिकोण मूलतः बौद्ध धर्म पर आधारित था। अलबरूनी ने भी प्रायः उपलब्ध भारतीय साहित्य के आधार पर ही वर्णन किया है, अपने अनुभव के आधार पर नहीं।

विदेशी यात्रियों के विवरण को हम तीन वर्गों में विभजित कर सकते हैं–

क. यूनान और रोम के लेखक ख. चीनी यात्रियों के विवरण ग. अब यात्रियों के विवरण

क. यूनान और रोम के लेखक : यूना और रोम के लेखकों में सबसे प्राचीन हेरोडोटस और टीसियस के वृतांत हैं। वस्तुतः इन लेखकों ने भारत के विषय में जानकारी ईरान से प्राप्त की थी। हेरोडोटस के वर्णन में कुछ उपयोगी तथ्य मिलते हैं, किंतु उनमें भी अनेक कल्पना पर आधारित कहानियां हैं। टीसियस के वर्णन में अधिकांशतः कल्पित कहानियां हैं जो पूर्णतः अविश्वसनीय हैं। इन दोनों लेखकों की अपेक्षा उन यूनानी लेखकों के विवरण विश्वसनीय हैं जो सिंकदर के साथ भारत आये थे। जैसे–नियार्कस, आनेसिक्रिटस और आरिस्टोबुलस के वर्णन। उनसे भी अधिक महत्वपूर्ण व विश्वसनीय वर्णन मेगास्थनीज का है। मेगास्थानीज की पुस्तक इंडिका अब उपलब्ध नहीं है। यूनान और रोम के लेखकों ने इंडिका के आधार र अपने वर्णन लिखे हैं। इन लेखकों के वर्णन बहुत उपयोगी हैं। क्योंकि उन्होंनें उन तथ्यों को लिखा हैं जिन्हें भारतीय लेखक महत्व नहीं देते थे। इन लेखकों के वर्णन चंद्रगुप्त के समय की राजनीतिक घटनाओं पर कम, सामाजिक रीति–रिवाजों और शासन प्रबंध पर अधिक प्रकाश डालते हैं। यूनानी लेखकों के ग्रन्थों में 'पेरिपल्स ऑफ दि एरिथियन सी' का इतिहास लेखन में महत्वपूर्ण स्थान है किंतु इसके लेखक का नाम अज्ञात है। इसने अपने वर्णन में भारतीय बंदरगाहों के नाम तथा इनसे आयात और निर्यात की जाने वाली वस्तुओं के नाम लिखे हैं। टॉलमी ने दूसरी सदी ईसवी में भारत का भौगोलिक वर्णन लिखा है। प्लिनी ने अपना वर्णन पहली सदी ईसवी में लिखा।

ख. चीनी यात्रियों के विवरण – चीनी यात्रियों में सबसे अधिक महत्वपूर्ण फाह्यान, ह्वेनसांग और इत्सिंग के वर्णन हैं। इनके वर्णन चीनी भाषा में अभी तक उपलब्ध हैं तथा इनके अग्रेंजी अनुवाद कर दिये गये है। फाह्यान 5वीं शती ईसवी में भारत आया था और 14 वर्ष भारत में रहा तथा उसने विशेष रूप से भारत में बौद्ध धर्म की स्थिति के विषय में लिखा। ह्वेनसांग हर्ष के शासनकाल में भारत आया था और वह 16 वर्ष भारत में रहा। उसने धार्मिक अवस्था के साथ–साथ तत्कालीन राजनीतिक दशा का भी वर्णन किया है तथा उसने हर्ष, भास्कर वर्मन आदि के विषय में लिखा है। किंतु इनका दृष्टिकोण ज्यादातर धार्मिक ही था, जिसका इनके वर्णन पर स्पष्टतः प्रभाव दिखाई पड़ता है।

ग. अरब यात्रियों के विवरण : अरब यात्रियों ने लगभग 8वीं शताब्दी से भारत के विषय में वर्णन करना शुरू कर दिया था। सुलैमान 9वीं शती ईसवी के मध्य भारत आया था तथा इसने पाल और प्रतिहार राजाओं के विषय में लिखा है। अल मसूदी 941 ई. से 943 ई. तक भारत में रहा। उसने राष्ट्रकूट राजाओं की महत्ता के विषय में लिखा है। अरब यात्रियों के विवरण में सबसे महत्वपूर्ण सीन अबूरिहान का है। उसका

M-1/80 Sec-B, Opp. Sardar Ji Sari Wale, Near Kapoorthala, Aliganj, Lucknow
Ph. : 0522-4005421, 9565697720
Website : www.tcsacademy.org

नाम अलबरूनी था। वह महमूद गजनवी का समकालीन था। उसने संस्कृत भाषा सीखी और भारत की सभ्यता एवं संस्कृति को पूर्ण रूप से जानने का प्रयत्न किया। उसका महत्वपूर्ण ग्रंथ तहकीक–उल–हिंद है और इसमें भारत का बहुत तर्कसंगत और पूर्ण वर्णन लिखा है। अलबरूनी ने भारतीय गणित, भौतिकी, रासायनशास्त्र, सृष्टिशास्त्र, ज्योतिष, भूगोल, दर्शन, धार्मिक क्रियाओं, रीति–रिवाजों और सामाजिक विचारधारा का महत्वपूर्ण वर्णन किया है।

उपरोक्त तथ्यों के आधार पर कहा जा सकता है कि इतिहास लेखन में ग्रंथों, सिक्कों, अभिलेखों और पुरातत्व आदि से प्राप्त साक्ष्यों का महत्वपूर्ण स्थान है। आधुनिक इतिहासकार काल विशेष में संबंध रखने वाली साहित्यिक तथा पुरातात्विक सामग्री का उपयोग करके सही चित्र प्रस्तुत करता है। साहित्यिक स्त्रोंतों का उपयोग करते समय वह उस काल की विचारधारा का ध्यान रखता है जिससे प्रेरित होकर

अभ्यास हेतु प्रश्न

1. भारतीय इतिहास को जानने के साधनों में सम्मिलित तत्व है/हैं?
   1. पुरातत्व–संबंधी साक्ष्य
   2. साहित्यिक साक्ष्य
   3. विदेशी यात्रियों के विवरण

   कूटः
   अ. 1 और 2
   ब. 2 और 3
   स. 1 और 3
   द. 1, 2 और 3
2. भारतीय इतिहास का अध्ययन करनें में पुरातात्विक स्त्रोत का विशेष महत्व है, क्योंकि–
   1. भारतीय इतिहास से संबद्ध ग्रंथों का रचना–काल स्पष्ट नहीं है, इसलिये उनसे किसी काल विशेष की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति का पूर्ण रूप से ज्ञान प्राप्त नहीं हो पाता है।
   2. साहित्यिक साक्ष्यों का दृष्टिकोण भी इतिहास का पूर्णतः सही वर्णन करने में अस्पष्ट है।
   3. ग्रन्थों की प्रतिलिपि करने वालों ने भी अपनी इच्छानुसार अनेक विद्यमान महत्वपूर्ण तथ्यों को छोड़कर नए तथ्य जोड़ दिये।

   कूट :
   अ. 1 और 2
   ब. 2 और 3
   स. 1 और 3
   द. 2 और 3
3. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये –
   1. प्राचीन भारतीय इतिहास के संदर्भ में सबसे प्राचीन अभिलेखों में मध्य एशिया के बोगजकोई से प्राप्त अभिलेख हैं, जिन पर वैदिक देवता के नाम लिखते हैं।
   2. भारत में सबसे प्राचीन अभिलेख चन्द्रगुप्त मौर्य के हैं।

   उपरोक्त कथनों में कथनों–सा/से सत्य है/हैं?
   अ. केवल 1
   ब. केवल 2
   स. 1 और 2 दोनों
   द. न तो 1 और न ही 2
4. निम्नलिखित कथनों में कौन–सा असत्य है?
   क. मध्य एशिया के बोगज़कोई से प्राप्त अभिलेख लगभग 1400 ई.पू. का है।
   ख. बोगज़कोई अभिलेख से ऋग्वेद की तिथि ज्ञात करने में सहायता मिलती है।
   ग. अशोक के सभी अभिलेख खरोष्ठी लिपि में हैं।
   घ. मास्की तथा गुर्जरा से प्राप्त अभिलेखों में अशोक के नाम का स्पष्ट उल्लेख है।
5. सूची–I को सूची–II से सुमेलित कीजिये।

सूची–I (अभिलेख)	**सूची–II** (शासक)
अ. हाथीगुम्फा अभिलेख	क. गौतमी बलश्री
ब. नासिक अभिलेख	ख. स्कंदगुप्त
स. भितरी स्तंभ लेख	ग. खारवेल
द. ऐहोल अभिलेख	घ. पुलकेशिन द्वितीय

कूट :

	क.	ख.	ग.	घ.
अ.	1	2	4	3
ब.	3	1	2	4
स.	2	3	1	4
द.	1	2	3	4

M-1/80 Sec-B, Opp. Sardar Ji Sari Wale, Near Kapoorthala, Aliganj, Lucknow
Ph. : 0522-4005421, 9565697720
Website : www.tcsacademy.org

6. भारतीय इतिहास के पुरातात्विक साक्ष्य के संबंध में सुमेलित कथन है/हैं–
   1. कुछ अभिलेख पाषाण या स्तंभों पर खुदे हैं तथा उनके प्राप्ति सिलों में उस शासक के राज्य की सीमाओं का भी अनुमान लगाया जा सकता है।
   2. सभी उत्कीर्ण अभिलेखों पर उनकी तिथि अंकित नहीं है, फिर भी अक्षरों की बनावट के आधार पर उनका समय मोटे तौर पर निर्धारित हो जाता है।

   उपरोक्त कथनों में कौन–सा/से है/हैं?
   अ. केवल 1
   ब. केवल 2
   स. 1 और 2 दोनों
   द. न तो 1 और न ही 2
7. ब्राह्मी लिपि को सर्वप्रथम किस विद्वान ने पढ़ा था?
   अ. दयाराम साहनी
   ब. राखालदास बनर्जी
   स. जेम्स प्रिंसेप
   द. माधवस्वरूप वत्स
8. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये–
   1. गुप्तकाल से पहले अधिकार अभिलेख प्राकृत भाषा में लिपिबद्ध हैं और उनमें ब्राह्मणोत्तर धार्मिक समुदायों का उल्लेख है।
   2. गुप्त और गुप्तोत्तर काल के अधिकतर अभिलेख संस्कृत भाषा में हैं और उनमें ब्राह्मण धर्म का विशेष उल्लेख है।

   उपरोक्त कथनों में कौन–सा/से सत्य है/हैं?
   अ. केवल 1
   ब. केवल 2
   स. 1 और 2 दोनों
   द. न तो 1 और न ही 2
9. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये–
   1. दक्षिण भारत के पल्लव, चालुक्य, राष्ट्रकूट, पांड्य और चोल वंशों का इतिहास लिखने में यहां के शासकों के अभिलेख बहुत अधिक उपयोगी सिद्ध नहीं हुये हैं।
   2. उत्तर भारत के मंदिरों की कला–शैली 'नागर शैली' का उदाहरण है।

   उपरोक्त कथनों में कौन–सा/से सत्य है/हैं?
   अ. केवल 1 ब. केवल 2
   स. 1 और 2 दोनों द. न तो 1 और न ही 2
10. निम्नलिखित में कौन–सा कथन असत्य है?
    अ. सिक्कों के अध्ययन को 'न्यूमिस्मेटिक्स' कहते हैं।
    ब. हड़प्पा काल में धातु मुद्रा की जगह मुहरों और मनकों का प्रचलन था जिससे व्यापार प्रणाली संचालित होती थी।
    स. जावा का प्रसिद्ध स्मारक 'बोरोबुदूर' इस बात का प्रमाण है कि 9वीं शताब्दी में वहाँ बौद्ध धर्म अतिलोकप्रिय हो गया था।
    द. चालुक्य, राष्ट्रकूट, प्रतिहार और पल्लव वंश के शासकों के सिक्के बहुतायत में मिले हैं।
11. निम्न में कौन–सा सुमेलित नहीं है?
    अ. मुद्राराक्षस – विशाखदत्त
    ब. राजतरंगिणी – पाणिनि
    स. हर्षचरित – बाणभट्ट
    द. रघुवंशम् – कालिदास
12. सूची–I को सूची–II से सुमेलित कीजिये।

सूची–I (रचना)	**सूची–II (रचनाकार)**
अ. अर्थशास्त्र	1. चंदबरदाई
ब. विक्रमांकदेवचरित	2. कौटिल्य
स. पृथ्वीराजरासो	3. बिल्हण
द. परिशिष्टपर्वन	4. हेमचंद्र

कूट :

	क.	ख.	ग.	घ.
अ.	2	4	1	3
ब.	2	4	1	3
स.	2	3	4	1
द.	2	3	1	4

13. नीतिसार के रचनाकार कौन हैं?
    अ. कालिदास ब. कामंदक
    स. कल्हण द.वाक्पति
14. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये–
    1. प्राचीन भारतीय इतिहास लेखन में विदेशी यात्रियों के विवरण भारतीय लेखकों के वर्णनों की अपेक्षा अधिक उपयोगी सिद्ध हुये हैं।
    2. अलबरूनी ने अधिकांश वर्णन उपलब्ध भारतीय साहित्य के आधार पर किया है, अपने अनुभव के आधार पर नहीं।

    उपरोक्त कथनों में कौन–सा/से सत्य है/हैं?
    अ. केवल 1 ब. केवल 2
    स. 1 और 2 दोनों दृ न तो 1 और न ही 2
15. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये–
    1. यूनान और रोम के लेखकों में सबसे प्राचीन हेरोडोटस और टीसियस के वृतांत हैं।
    2. फाह्यान और ह्वेनसांग अरब के यात्री थे, जो गजनवी के साथ भारत आए थे।

    उपरोक्त कथनों में कौन–सा/से सत्य है/हैं?
    अ. केवल 1
    ब. केवल 2
    स. 1 और 2 दोनों
    द. न तो 1 और न ही 2

M-1/80 Sec-B, Opp. Sardar Ji Sari Wale, Near Kapoorthala, Aliganj, Lucknow
Ph. : 0522-4005421, 9565697720
Website : www.tcsacademy.org